✺ 29 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] मनुष्य कहते भी हैं ओ गॉड फादर... वह नॉलेजफुल टीचर भी है, सुप्रीम गुरु भी है। एक ही है, ऐसा कोई दूसरा मनुष्य मात्र नहीं होगा। उनको पढ़ाना भी मनुष्य तन में है। पढ़ाने के लिए मुख तो जरूर चाहिए। यह भी बच्चों को घडी-घडी स्मृति रहे तो भी बेड़ा पार हो जाए।

2] एक बाप के बच्चे हम सब भाई-भाई हैं। फिर जब बाप आते हैं, प्रजापिता ब्रह्मा के तन में तो भाई-बहन होना पड़ता है। प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली तो भाई-बहन होंगे ना। भाई की बहन से कभी भी शादी नहीं होती है। तो यह सब प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो गये। तो भाई-बहन समझने से जैसे बाप के लवली चिल्ड्रेन ईश्वरीय सम्प्रदाय हो गये।

3] बाप कहते है मैं इस वैराइटी मनुष्य सृष्टि का बीज हूँ। हैं तो सब मनुष्य, परन्तु वैराइटी हैं। एक भी आत्मा के शरीर के फीचर्स दूसरे जैसे नहीं हो सकते। दो एक्टर्स एक जैसे नहीं हो सकते। यह है बेहद का ड्रामा। हम मनुष्यों को एक्टर्स नहीं कहते हैं, आत्मा को कहते हैं। वो लोग मनुष्यों को ही समझते हैं। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम आत्मायें एक्टर्स हैं।

4] कह देते हैं– यह सब कुछ ईश्वर ने दिया है। अच्छा, फिर उनकी दी हुई चीज़ में ख्यानत थोड़ेही डालनी चाहिए। परन्तु उस पर भी चलते नहीं। रावण मत पर चलते हैं। बाप समझाते हैं तुम तो ट्रस्टी हो। परन्तु रावण सम्प्रदाय होने कारण तुम ट्रस्टीपने में अपने को धोखा देते हो। मुख से कहते एक हो, करते दूसरा हो।

5] मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं। यही घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बाप भी जानते हैं बच्चे काम चिता पर बैठकर काले हो गये हैं। कब्रदाखिल हो पड़े हैं, इसलिए सांवरे बन गये हैं। उनको ही फिर बाप कहते हैं हमारे बच्चे सब जल मरे हैं। यह बेहद की बात है।

✺ योग-

1] याद में जब बैठते हो तो बाप की करेन्ट खींचते रहो। बाप तुम्हें देखे और तुम बाप को देखो, ऐसी याद ही आत्मा को पावन बना सकती है। यह बहुत सहज याद है, लेकिन बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं कि हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। देही-अभिमानी बच्चे ही याद में ठहर सकते हैं।

2] बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। सुप्रीम टीचर समझने से सारा ज्ञान बुद्धि में आ जायेगा। वह सतगुरू भी है। हमको योग सिखला रहे हैं। एक के ही साथ योग लगाना है। सभी आत्माओं का एक ही फादर है। सब आत्माओं को कहते हैं मामेकम् याद करो। आत्मा ही सब कुछ करती है।

3] तुम जितना बाप को देखेंगे, पवित्र होते जायेंगे। और कोई उपाय पावन बनने का है नहीं।

4] सारे दिन के हर कर्म में कभी भगवान के सखा वा सखी रूप को, कभी जीवन साथी रूप को, कभी मुरब्बी बच्चे के रूप को, जब कभी दिलशिकस्त होते हो तो सर्वशक्तिवान स्वरूप से मा. सर्वशक्तिवान के स्मृति स्वरूप को इमर्ज करो तो दिलखुश हो जायेंगे और बाप के साथ का स्वत: अनुभव करेंगे।

✺ धारणा-

1] इसमें में भी तुम कुमरियों के लिए तो बहुत सहज है। माताओं को तो जो सीढ़ी चढ़ी है वह उतरना पड़े। कुमारी को तो कोई और बन्धन नहीं। चिन्तन ही नहीं, बाप का बन जाना है। **लौकिक सम्बन्ध को भूल पारलौकिक सम्बन्ध जोड़ना है।** कलियुग में तो है ही दुर्गति। नीचे उतरना ही है, ड्रामा अनुसार।

2] बाप रोज़ बैठ बच्चों को कशिश करते है कि अपने को आत्मा समझे और बाप को देखो। यह शरीर भी भूल जाए। हम तुमको देखें, तुम हमको देखो।

✺ सेवा-

1] पहले तो कोई को भी बाप का परिचय देता है। ऐसा बाप तो और कोई होता नहीं।